''ख़तोकिताबत कश्मीर के नाम।
सौ सद् सदके, सौ सद् सलाम।।''

हमारे हृदय में निहित या यूँ कहें दिल में महफूज कश्मीर के साथियों और सखियों!

सादर व स्नेहासिक्त अभिवादन!

आप वहाँ विराजमान हैं जहाँ शब्द नहीं पहुंच सकते। आप जिस तरह बाहरी चीन और पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित कायर, क्रूर व कुत्सित आतंकवाद, संकीर्ण अलगाववाद और परपीड़क षड्यंत्रकारी साम्प्रदायिकता के विरुद्ध निर्णायक युद्ध लड़ रहे हैं। इस हेतु हम सभी ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण भारत आपके प्रति कृतज्ञ प्रशंसाभाव से ओत–प्रोत है। आपने कश्मीरियत, भारतीयता और मानवता को सम–भाव से जीते हुए पूरी दुनिया में भारत माता का सर सदैव ऊँचा किया है। पहलगाम हमले के बाद जो दृश्य दुनिया ने देखे उन दृश्यों ने दुनिया को बता दिया कि भारत में स्नेहासिक्त–भाव–सिंचित एकता की डोर बड़ी सशक्त और शाश्वत है।

हमें यह कहने और स्वीकारने में रंच मात्र हिचक नहीं कि आप हमारे राष्ट्रनायकों की कसौटियों पर पूर्णतया खरे उतरे हैं। आपका साहस, आपकी जिजीविषा और आपके इंसानी तकाजों की जितनी प्रशंसा व जितना प्रणाम किया जाय, कम है। महर्षि कश्यप, महान कल्हण, हब्बा खातून से लेकर शेख अब्दुल्ला तक आपकी महान गौरवशाली परम्परा पर पूरा भारत गर्व करता है। सुन्दरता के संदर्भ में आप अनन्वय अंलकार के उदाहरण हैं। ''सत्यं शिवं सुन्दरम्'' का मंत्र आप के यहाँ स्वतः फलीभूत होता है तभी तो आपके यहाँ बाबा अमरनाथ विराजे हैं और आदि गुरु शंकराचार्य को माँ शारदे का आशीर्वाद आपकी ही पुण्य भूमि पर प्राप्त हुआ।

पहलगाम के हमले के बाद हिन्दू–मुसलमान के कृत्रिम विभेद को भुलाकर जिस तरह आपने पर्यटकों की मदद की, इंसानियत मजबूत हुई। उसके पहले सबने देखा कि सैयद आदिल हुसैन शाह के रूप में आपने उन पर्यटकों की रक्षा करते हुए अपनी शहादत दी जिनसे पहले कभी मिले नहीं थे, शायद आगे मिलने की संभावना दूर–दूर तक नहीं थी। शहीद सैयद आदिल ने यथा नाम–तथा गुण'' अपने इंसानी तकाजों के साथ न्याय किया और मानवता की रक्षा करते हुए अपनी हसंतो–गाती गुनगुनातो जिन्दगानी लुटा दी और एक बेमिसाल मिसाल बने। आदिल के माध्यम से आपने दर्शा दिया कि **''अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम, उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्''** के सूत्रवाक्य को आप चरितार्थ करते हैं। उसी हमले में फंसे ग्यारह (11) पर्यटकों को अपनी जान जोखिम में डाल कर बचाने वाले नाजवान कपड़ा व्यवसायी नजाकत अली का उल्लेख करना भी इस संदर्भ में समीचीन होगा। आपने होटल वाले, टैक्सी वाले, खच्चर वाले के रूप में फरिश्ता बनकर पर्यटकों की सहायता की जिससे मानवता का मान बढ़ा। इसके ठीक उलट बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के मालिक स्वघोषित राष्ट्रप्रेमी इस दिन भी कमाई बढ़ाने में लगे रहे। नकारात्मक बातों को छोड़ा जाय। आपको पत्र लिखते हुए अमीर मीनाई का शेर याद आ गया कि –

''खंजर चले किसी पे तड़पते हैं हम अमीर
सारे ज़हाँ का दर्द, हमारे जिगर में है''

मुझे तो आपके ''गरीब'', जहाज–मालिकों जैसे ''अमीरो'' से बहुत ज्यादा दिलदार और अमीर लगे, मुझे क्या? पूरी दुनिया को लगे।

हम सभी ''द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं'' की भाँति सहोदर, स्व और सखा हैं। हम जानते हैं कि आतंकवादियों के मंसूबों पर आपने चिनाब का पानी फेर दिया, लेकिन इसका दुष्प्रभाव पर्यटन पर पड़ा है। लोगों ने कश्मीर आना कम कर दिया है, हम सबसे अपील करेंगे कि सब झूमकर इतराते–गाते कश्मीर

आयें और आतंकवाद को सीधी चुनौती दें, खत लिखते–लिखते मुझे स्मृति पटल पर अचानक शायर–ए–आजम कैफी आज़मी का लिखा गीत अनुगुंजित होने लगा है जिसमें कैफी साहब हम लोगों से राम–लक्ष्मण की तरह 'सीता' समान ''भारत माता'' की रक्षा करने की अपील करते हुए लिखते हैं ....

कर चले हम फिदा जानोतन साथियों,
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियों,
सांस थमती गई नब्ज जमती गई,
फिर भी बढ़ते कदम को न रुकने दिया।
कट गये सर हमारे तो कुछ गम नहीं,
सर हिमालय का हमने न झुकने दिया।
मरते–मरते रहा बांकपन साथियों।
खींच दो अपने खूॅं से जमीं पे लकीर,
इस तरफ आने पाये न रावन कोई
तोड़ दो हाथ अगर हाथ उठने लगे,
छू न पाये ''सीता'' का दामन कोई,
राम भी तुम, तुम्हीं लक्ष्मण साथियों।''

भले ही ये शब्द कैफी आज़मी के हों लेकिन इनमें निहित भाव हमारे चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंह सदृश हिन्दुस्तान समाजवादी गणतांत्रिक सेना के सेनानियों, शहीद अशफाक उल्ला खान, वीर सुभाष चन्द्र बोस से लेकर लोहिया व लोकनायक जयप्रकाश नारायण जैसे राष्ट्रनायकों के हैं। आपके साथ अनेक ऐतिहासिक तथ्य हैं जिसके हम सभी मुरीद हैं। आपने ''जिन्ना'' के दिखाये सब्ज़बाग को नकार कर साहिर लुधियानवी को चुना और उनके समकालीन व तत्कालीन कथन को सर्वकालीन सुभाषित में बदल दिया कि –

''वो वक्त गया वो दौर गया, जब दो कौमों का नारा था,

वो लोग गये इस धरती से, जिनका मकसद बंटवारा था।''

आपने साबित कर दिया कि कश्मीरी जितने सादिक मुसलमान व हिन्दू हैं उतने ही सच्चे भारतीय हैं। द्विराष्ट्रवाद से आपका कोई सरोकार न तब था और न अब है। पाकिस्तान के आतंकी आकाओ के भरम को आपने पहलगाम हमले के बाद तोड़ दिया। हम बड़े गर्व के साथ महसूस करते हैं कि आपने हिमालय का सर कभी झुकने नहीं दिया और हमारे रक्षक बने रहे। इस बार साम्प्रदायिकता को जो मुंह–तोड़ जवाब कश्मीर की धरती से मिला है, काबिल–ए–तारीफ है। हर लड़ाई और प्रतिकार की एक कीमत होती है, कश्मीर अपवाद नहीं है। वह कीमत हमारे–आपके कश्मीर को बार–बार चुकानी पड़ी है। एक बार फिर आप चुका रहे हैं। एक बार फिर कश्मीर को पर्यटकों की चहल–पहल से महरूम होना पड़ रहा है। पहलगाम हमले के बाद सैलानियों का आना, सुना है कम हो गया है। तरक्की की हवा थम सी गयी है। हमारे लिए कश्मीर हमारे राष्ट्र का मुकुट है, केवल एक सैर सपाटे की जगह नहीं। हमारे लिए कश्मीर भारत की अखण्डता व संप्रभुता के लिए भारत के दुश्मनों से अनवरत लड़ने वाला अप्रतिम भारतीय योद्धा है। हम कश्मीर, आतंकवाद से जारी आपकी लड़ाई में अपका मनोबल बढ़ाने आये हैं।

आज आग़ा हश्र कश्मीरी की पंक्तियां एक बार पुनः ज़ेर–ए–ज़ेहन है।

जल्वागाह–शौकते, आशिक को सूना कर दिया।

जन्नतेदुनिया को, दोज़ख का नमूना कर दिया।

इस शिकायत के साथ सृजन के पुनरोत्थान का संकल्प भी है।

अज़ करम बपज़ीर यारब जोशे बे–अन्दाज़ारा,

ता कयामत ज़िन्दादार ई ज़िन्दगी ए ता ज़ारा।

ज़र्रा–ज़र्रा कह रहा है, हे! ईश्वर, हमारे जोशो–खरोश को प्रेम की निगाह से देखना और कयामत तक ज़िन्दगी को ताजा रखना। सही है कि दुनिया में जो सकूॅ चिनाब नदी के किनारे मिलता है, बहुत कम जगह मिलता है। कश्मीर की वादियों की बात ही कुछ और है। शायर नाज़िश परतापगढ़ी ने कश्मीर की तस्वीर खींचते हुए लिखा है–

सलाम वादे–ए–कश्मीर अब उरूसे–जमीं,
तिरा दयार है जिन्दगी का ख्वाबे –हसीं
जहाँ हसीन है लेकिन तेरा जवाब नहीं
बजा कहा तुझे जिसने कहा बहिश्ते–बरीं
ये जगमगाते चिकारे, यह साफ सीनः–ए–डल
ये हुस्नेवादि –गुलमर्ग है कि जाने गज़ल
इक एक मोड़ पे यह जू–ए–बारे–मस्ते खराम
कि जैसे कृष्ण की नजरों में प्रीत का पैगाम
कुछ इस निखार से आती है इस दयार में शाम
कि जैसे ज़ुहद के लब पर रूबाई–ए–खैयाम
सलाम वादि–ए–कश्मीर इश्के खित्तः–ए–नूर
तिरा जवार हंसी है जवान तेरे जमहूर
तुझी से खाक की जीनत, तू ही जमीं का गुरूर
तुझी को कहते हैं धरती की मांग का सिन्दूर
सलाम तुझपे कि हिन्दोस्तान की लाज है तू
सलाम तुझपे कि मेरे वतन की ताज़ है तू
बुरी निगाह जो दुश्मन तुझ पे डालेंगे
हम अहले हिन्द दिलों में तुझे बिठा लेंगे।

जनाब नाजिश ने जो बात कही है वही अभिव्यक्त करने की कोशिश मेरा यह खत है। सचमुच कश्मीर की वादी का दयार किसी सपने से कम नहीं है। जिसने भी इसे 'स्वर्ग' कहा है, ठीक ही कहा है। साफ डल झील के सीने में जगमगाते शिकारे की बात कुछ और है। गुलमर्ग तो किसी प्रिय गजल की तरह मनमोहिनी है। नदियों का मोड़ यूँ लगता है कि ये भगवान कृष्ण के प्रेम के संदेश के समान हो। यहां की शाम–सलोनी संयम के साथ गाई जा रही खय्याम की रुबाई लगती है। कश्मीर के रंगों के क्या कहन। आप जमीन के गुरूर हो तभी तो आपको धरती का सिन्दूर कहा जाता है। आप भारत की लाज और हिन्दोस्तान के ताज हो। भौगोलिक रूप से भी कश्मीर वहाँ स्थापित है जहाँ हिन्द के मणि–मुकुट को होना चाहिए। दुश्मनों की बुरी नजर से आपको बचाने के लिए हम सभी आपके साथ व पीछे खड़े हैं।

इतिहास साक्षी है कि भारत की आत्मा को दुःखी करने और हिन्दुस्तान को चोट पहुॅचाने के इरादे से देश के दुश्मनों ने हमारा '''ताज'' छीनने की बार–बार कोशिश की और उन्हें बार–बार हार का सामना करना पड़ा है तो वे मानवता को लांछित करने वाले कायराना क्रूर आतंकवादी हमलों की शरण लेते हैं जिसका ताजातरीन उदाहरण पहलगाम का हमला है। पहले भी कई हमले हुए हैं। वातावरण में उच्चावचन अथवा आरोह–अवरोह आये हैं लेकिन कश्मीर की अवाम, हम आप सदैव जीते हैं और आगे भी जीतते रहेंगे। मशहूर शायर जॉनिसार अख्तर अक्सर कश्मीर आते थे। एक बार ऐसे हमलों के बाद आये तो यह लिखने के लिए मजबूर हुए।

यह वादी किस तरह शादाब थी अगली बहारों में
यहीं हमने मुहब्बत की हंसी जादू जगाए थे।
इन्हीं शादाबियों में दिल के गुंचे मुस्कुराए थे।
जवानी बाद–ए–गुलरंग दोनों को पिलाती थी।

कोई देवी शफक में मुंह छुपाए मुस्कुराती थी।
न अब नग्मे हैं, डालों पर न अब खुशबू है खारों में
बस इस दुखते हुए दिल की सदा है आबशारों में
यह वादी किस कदर शादाब थी अगली बहारों में।

कश्मीर की देवी हर दुःख, दर्द–दंश व दलन के बाद पुनः फीनिक्स पक्षी की तरह पुनर्नवा होती रही है। इसके हम सभी साक्षी हैं। यही गौरवशाली इतिहास अपने को पुनः दोहरायेगा। दानवी आंतकों के बीच कश्मीर और आप ने मानवी महिमा के काफी किस्से गढ़े हैं। इस बार भी पूरा देश आपकी कहानियों से मुदित है कि कैसे मात्र दो–तीन सौ रुपये प्रतिदिन कमाने वाले दोस्तों ने हमले के बाद परेशान पर्यटकों को एयरपोर्ट पहुॅचाया और पैसे तक नहीं लिये, ऊपर से नाश्ता–पानी अपने पास से कराया। सद्भाव की देवी को आपने मुस्कान दी, साम्प्रदायिकता की डायन के मनोबल तोड़े जो आतंकवाद के पैशाचिक हमले के बाद नग्न–नर्तन करने की पूरी कोशिश करती है। आप तो खुद हमारे मनोबल के प्रेरणास्रोत हो। हम आपका मनोबल क्या बढ़ायेंगे? फिर भी अपना लोकधर्म है, रस्म निभाने आ गये हैं। कश्मीर समस्या नहीं, समाधान है। कुछ लोग हर जगह की तरह यहाँ भी हैं जो समस्या उत्पन्न करते हैं, स्वयं समस्या बनते हैं, लेकिन ज्यादातर अवाम सुख, शांति, समृद्धि, समानता, सामाजिक न्याय और समाजवाद चाहती है।

बात समाजवाद की आ गई है तो कश्मीर के संदर्भ में महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी राममनोहर लोहिया के योगदान, चिन्ताओं और कोशिशों से अवगत कराना चाहूंगा जो दरअसल समूचे भारतीय राष्ट्रमन व भारतीय समाज की चिन्तन एवं चिन्ताएँ हैं। लोहिया उस दौर के कालजयी चिन्तक और क्रांतिधर्मी नेता हैं जब स्वतंत्रता के बाद भारत का नवनिर्माण हो रहा था। कश्मीर का भारत में विलयन भी उसी दौर की घटना है जो 26 अक्टूबर 1947 को हुआ था

और तत्पश्चात् 16 जून 1949 को संविधान सभा में जम्मू और कश्मीर से शेख मोहम्मद अब्दुल्ला, पंडित मोतीराम बागरा, मिर्जा अफजल बेग और मौलाना मोहम्मद सईद मसूदी शामिल हुए। देश के संविधान व नवनिर्माण में कश्मीर की महान विभूतियों का अनन्य अवदान है। लोहिया के प्रति शेख अब्दुल्ला के सम्मान–भाव को दो घटनाओं से रेखांकित कर सकते हैं। घटना 10 अथवा 11 अक्टूबर 1967 की है, महान स्वतंत्रता सेनानी राम मनोहर लोहिया अस्पताल में यमराज के साथ द्वैरथ–युद्ध में रत थे। उनका कुशलक्षेम पूछने शेर–ए–कश्मीर शेख अब्दुल्ला पहुॅचे जो सीआईडी व पुलिस के घेरे में थे संभवतः उस समय शेख कतिपय कारणों से नजरबंद थे। इसका वर्णन तत्कालीन पुलिस मंत्री (बिहार) रामानंद तिवारी ने कई बार, कई जगह किया है। लोहिया के महाप्रयाणोपरान्त शेख अब्दुल्ला उनके सरकारी आवास 7 रकाबगंज रोड, नई दिल्ली भी पहुॅचे। अन्तिम प्रणाम के बाद अतिथि पुस्तिका पर लिखा 'सारे कश्मीर का सलाम' शेख अब्दुल्ला जब तक लोहिया के पार्थिव शरीर के साथ रहे, अश्रुपूरित रहे जैसे किसी अत्यन्त करीबी अथवा रहबर के देहांत के बाद कोइ अपना होता है। शेख अब्दुल्ला के लोकतांत्रिक प्रतिकारों को राममनोहर लोहिया का भरपूर आशीर्वाद, सम्बल व स्नेह मिलता था, इसकी साक्षी संसद भवन की प्राचीरें एवं ऐतिहासिक बहसें हैं। दरअसल शेख अब्दुल्ला निमित्त मात्र थे लोहिया एवं भारतीय समाजवादियों का मूल लगाव कश्मीर से था। लोहिया के संसद में पहुंचने के बाद कश्मीर से जुड़े अनेक सवाल लोकसभा में गंभीरता से उठे। मार्च 03, 1966 को लोहिया ने कश्मीर में घुसपैठियों के प्रश्न को उठाया। तत्कालीन प्रतिरक्षा राज्य मंत्री ए0एम0 थॉमस द्वारा संतोषजनक उत्तर न मिलने पर दोबारा 27 मार्च 1966 को उठाया और सरकार को सलाह दी कि कश्मीर की प्रभुसत्ता पर सरकार को एक मत रहना चाहिए। इसी दिन लोहिया ने तत्कालीन सिंचाई और विद्युत मंत्री फखरुद्दीन अली अहमद से सलाल उदय जल विद्युत परियोजना

के जांच की बात कही थी। इसी सत्र में जब एक कम जानकार सांसद ने शेख अब्दुल्ला की अल्जीरिया यात्रा पर विश्वासघाती कहा तो सदन में समाजवादी चिंतक मधु लिमये ने जबर्दस्त प्रतिकार किया। मार्च 25, 1966 को तत्कालीन गृह कार्य मंत्री श्री गुलजारी लाल नंदा के एक कथन पर अपनी टिप्पणी देते हुए लोहिया ने शेख अब्दुल्ला को एक ''तेजस्वी पुरुष'' की संज्ञा दी थी। 20 अप्रैल 1966 को लोहिया ने सरकार से शेख अब्दुल्ला से बातचीत करने और हिन्दू–मुस्लिम एकता की दिशा में काम करवाने की सलाह दी। 25 जुलाई 1966 को पुनः लोहिया ने घुसपैठियों के सवाल को उठाते हुए सदन को बताया कि चीनी शिक्षक पाकिस्तानी फौजियों को गोरिल्ला युद्ध का प्रशिक्षण दे रहे हैं। अगस्त 02, 1966 को राम मनोहर लोहिया ने कश्मीर में व्याप्त भुखमरी के प्रश्न को लोकसभा में उठाया जो उनकी कश्मीर के सर्वतोन्मुखी विकास के प्रति उनकी संवेदनशीलता को प्रतिबिम्बित करता है। इसी सत्र में लोहिया ने 03 अगस्त 1966 को बारामूला में जम्मू कश्मीर के तत्कालीन मुख्यमंत्री जी0एम0 सादिक के ऊपर हुए बम के हमले और भारत पाकिस्तान संघर्ष में विस्थापित हुए कश्मीरी परिवारों के पुर्नवास में हो रही कोताही पर चिन्ता और आक्रोश व्यक्त किया। लोहिया कश्मीर में अमरीका के अनावश्यक हस्तक्षेप के विरुद्ध थे। उन्होंने 25 मई 1967 को अपनी इस चिन्ता से संसद को अवगत भी कराया। बम्बई में एक दिन लोकनायक जयप्रकाश नारायण ने कहा कि पाकिस्तान से अच्छे सम्बन्ध स्थापित करने के लिए हमें कश्मीर का बंटवारा कर देना चाहिए। जेपी ने यह बात सितम्बर 1950 में कहो। लोहिया ने स्पष्ट किया कि सोशलिस्ट पार्टी की नीति अखण्ड कश्मीर को भारत में शामिल करना है क्योंकि कश्मीर और भारत का शरीर व मन एक है। लोहिया ने जून 1951 में प्रकाशित अपने लेख में शेख अब्दुल्ला को ''बढ़िया'' आदमी बताते हुए नागरिकों से अपील की कि हमारे ज्यादा लोग कश्मीर जायेंगे और वहॉ अपनी छुट्टियां बितायेंगे ताकि कश्मीर की

आर्थिक स्थिति जमाने में सहायता हो। परन्तु मैं इन यात्रियों को सावधान कर दूँ कि वे हमेशा ध्यान रखें कि कश्मीर शायद द्वि–राष्ट्र सिद्धांत का अंतिम युद्ध स्थल है जहाँ कि वह हमेशा के लिए या तो दफना दिया जायेगा या पुनः जीवित होकर पनपेगा। अंत में अपनी पक्की आशा व्यक्त करना चाहूँगा कि एक स्वतंत्र और समान संसार के हित में तोड़–फोड़ के कट्टरपंथ से रहित नवजागृत एशिया के हित में और अंततोगत्वा हिन्दुस्तान की जनता के अभिन्न अंग होने के कारण कश्मीर की जनता चाहती है कि कश्मीर जो हिन्दुस्तान का अंग है, हिन्दुस्तान का ही अंग बना रहेगा।''

लोहिया ने कश्मीर में लोकतंत्र को मजबूत करने के लिए चल रहे अभियानों को वैचारिक समझ व संबल दिया। बख्शी गुलाम मोहम्मद, मौलाना मोहम्मद सईद जैसे नेता लोहिया से सीधे जुड़े थे और भारतीयता के अलम्बरदार थे।

लोहिया साम्प्रदायिकता को कश्मीर के लिए आतंकवाद के समान खतरा मानते थे। लोहिया ही नहीं उन्हीं की तरह पंडित दीनदयाल उपाध्याय भी कश्मीर में लोकतंत्र की मजबूती चाहते थे और मई 10, 1954 को मध्य प्रदेश जनसंघ के अधिवेशन में कोलम्बो में मोहम्मद अली से कश्मीर के प्रश्न पर वार्ता करने से मना करने के कारण पंडित जवाहर लाल नेहरु की खुली तारीफ की थी। सर्वविदित है कि जनसंघ कांग्रेस की विरोधी पार्टी थी, जिसके शीर्ष नेता पंडित दीनदयाल उपाध्याय थे। तत्कालीन जनसंघ ही वर्तमान में भारतीय जनता पार्टी है। इसी अधिवेशन में दिये अपने संभाषण में एक बात जो पंडित दीनदयाल ने तत्कालीन प्रधानमंत्री और केन्द्र सरकार से कही थी, वह वर्तमान प्रधानमत्रो व सरकार पर भी लागू होती है कि पाकिस्तान से उस एक तिहाई कश्मीर को मांगना चाहिए जो पाकिस्तान के पास है। कश्मीर वैसे भी विकास क्रम में उस सोपान पर नहीं है, जहां होना चाहिए। कश्मीर की प्रति व्यक्ति आय वर्तमान में 1

लाख 42 हजार 140 रुपये है जो अपने पड़ोसी प्रांत पंजाब से 54 हजार 104 रुपये कम है। भारत की औसत आमदनी की कसौटी पर भी कश्मीर की प्रति व्यक्ति आय खरी नहीं उतरती। ऐसे में हम सभी को कश्मीर पर विशेष ध्यान देना चाहिए। वहाँ सामाजिक, आर्थिक गतिविधियां बढ़ानी चाहिए। आतंकवाद और साम्प्रदायिकता से जूझते आप और कश्मीर को हमारे सद्भाव, संबल, स्नेह और शक्ति की जरूरत है। हम आपके साथ है। यह यात्रा इसी सद्भावना के आत्मीय स्वर को प्रतिध्वनित, प्रतिबिम्बित एवं प्रतिबलित करती है।

इत्यलम्

आपका शुभैषण

(दीपक मिश्र)